गौरी का गुस्सा

स्वयं प्रकाश

गौरी का गुस्सा

स्वयं प्रकाश

यह एक सुहाना दिन था।

नंदी पर आरूढ़ शिव-पार्वती आकाशमार्ग से विचरण कर रहे थे। धराधाम की शोभा निहारते। मगन और मुदित। कहीं बर्फ ढँके पहाड़, कहीं नीलम-सा समुद्र, कहीं मूँगे-से मैदान, कहीं सोने-सी फसलें, कहीं चाँदी-सी धूप। कहीं बागों में बहार तो कहीं कलियों पर निखार।

सहसा पार्वती की नज़र रतनलाल अशांत पर पड़ी जो पंचरतन टाकीज़ के सामने फत्तू नाई की केबिन के बाहर बैठा अपनी फूटी किस्मत को कोस रहा था। उसके हाथ में स्थानीय चारपेजी अखबार 'फसलांचल टाइम्स' था जिसे वह सुबह से अब तक पाँच बार पढ़ चुका था। पहले उसने समाचार, संपादकीय और विज्ञापन पढ़े, फिर किराये पर देना है, अदालती सूचना, सौ तालों की एक चाभी वगैरह और अंत में उठावणा, तुम्हारी पुण्यतिथि पर और श्रद्धांजलि आदि। फिर उसने धराधाम से अभी-अभी या पहले कभी कूच कर गये भाग्यशालियों की तस्वीरें ध्यान से देखीं और फिल्म अभिनेताओं-अभिनेत्रियों के चेहरों से उनका मिलान किया। पेन में रिफिल खत्म हो गयी थी वर्ना वह दो-चार दिवंगत महिलाओं के चेहरों पर दाढ़ी-मूँछ ज़रूर बनाकर देखता कि पुरुष-स्वरूप में वे कैसी लगती हैं। पंचरतन टाकीज़ में शाहरुख खान की नयी पिक्चर लगी थी, लेकिन रतनलाल अशांत पोस्टर देखने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए भी अब वह अपनी फूटी किस्मत को कोस रहा था।

रतनलाल अशांत जन्म से अशांत नहीं था। अशांति का पहला बोध उसे तब हुआ जब अपने गरीब घर की आर्थिक असलियत उसे समझ में आयीं फिर भी असली अशांत तो वह सरला गर्ग के प्रेम में पड़कर ही हुआ। फिर इस उपलक्ष में जब वह बीए फाइनल में फेल हुआ तो काफी मात्रा में अशांत हो गया और अंततः बीए किसी तरह पास कर लेने के बावजूद जब न कहीं नौकरी मिली न बीएड में एडमिशन, तो वह लगभग स्थायी रूप से अशांत हो गया। पिछले दो साल से स्थायी अशांति की यह स्थिति चल रही थीं इसके लिए सरला गर्ग की सात पीढ़ियों के अलावा वह नौकरी दे सकने वाले तमाम विभागों की आठ-

आठ पीढ़ियों का भी अच्छी तरह तर्पण कर चुका था और अंततः उसके भविष्य के सारे संभावित प्रकाश का 'प्र' निकल गया था और 'काश' रह गया था। काश! वह दस-बीस साल पहले पैदा हुआ होता जब बगैर बीएड किये भी मास्टरी मिल जाती थीं काश! वह किसी अमीर घर में पैदा हुआ होता! काश! कोई उसे घरजमाई बना लेता! काश! वह एससी-एसटी होता! काश! किसी एससी-एसटी ने उसे गोद ही ले लिया होता! क्या विडंबना है कि आप पसंद के माँ-बाप को गोद नहीं ले सकते। एक बार तो यह संताप यहाँ तक बढ़ गया कि रतनलाल अपने मोहल्ले की बूढ़ी जमादारिन से ही निवेदन कर बैठा-काकी! तू मेरे को गोद ले ले! काकी बोली तो कुछ नहीं, बुरा-सा मुँह बनाकर चली गयीं शायद वह बात की लक्षणा को नहीं समझ पायी थी, निहितार्थ तो खैर क्या समझती! या कहीं ऐसा तो नहीं कि वह निहितार्थ भी समझ गयी थी? क्या पता!

अब हालत यह है कि रतनलाल अशांत को परिवार वाले अपने दुश्मन लगते हैं और घर काटने को दौड़ता है। सुबह-सुबह तैयार होकर जैसे-तैसे चाय की एक प्याली सुड़ककर घर से निकल जाता है और फिर कहाँ जाये? तो यहाँ फत्तूनाई की दुकान पर आ बैठता है। क्या पता किसी दिन कोई फायनांसर-डिस्ट्रीब्यूटर या डायरेक्टर पंचरतन टाकीज़ के सामने से गुज़रे, उसकी नज़र रतनलाल अशांत पर पड़ जाये, वह सामने आकर खड़ा हो सकता? इस दुनिया में कुछ भी हो सकता है बॉस! सिर्फ लक चाहिए। काश!

डिस्ट्रीब्यूटर-फायनेंसर-डायरेक्टर की तो नहीं, पार्वती की नज़र ज़रूर रतनलाल अशांत पर पड़ गयी, जो उस सुहाने दिन शिवाजी के साथ नंदी पर आरूढ़ धराधाम की शोभा निहारती आकाशमार्ग से विचरण कर रही थीं। रतनलाल उन्हें बेचारा बड़ा दुखी लगा। बेचारे को घरवाले तक दुत्कारने लगे हैं! कहाँ जाये! पार्वती से उसका दुख देखा न गया। वे रतनलाल के सामने प्रगट हो गयीं और बोलीं, ''तुम्हें क्या चाहिए बेटा?''